**Knowledgeable Research (KR) 2026, (5):01**
**ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU**
**International open-access peer-reviewed refereed monthly journal**
**https://knowledgeableresearch.com/index.php/1**

# साहित्यिक नैतिकता और कृत्रिम मेधा

**प्रा. मारोती दत्ता गंगासागरे***
**हिंदी विभाग,ज्ञानोपासक महाविद्यालय जिंतुर.**

**शोध सार**

*प्रस्तुत शोध-पत्र कृत्रिम मेधा (AI) के संदर्भ में हिंदी साहित्य के बदलते स्वरूप, उसकी संभावनाओं तथा चुनौतियों का विवेचन करता है। तकनीकी विकास ने साहित्य की रचना-प्रक्रिया, विषयवस्तु, भाषा, अनुवाद तथा प्रसार के माध्यमों में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। कृत्रिम मेधा द्वारा सृजित पाठ, रचनात्मकता की अवधारणा को पुनः परिभाषित करने की आवश्यकता उत्पन्न करता है और यह प्रश्न खड़ा करता है कि साहित्य में मानवीय संवेदना, चेतना एवं अनुभव की भूमिका क्या बनी रहेगी। यह शोध हिंदी साहित्य में कृत्रिम मेधा से उत्पन्न नए कथ्य रेखांकित करता है। जैसे मानव एवं मशीन संबंध, नैतिकता, पहचान और तकनीक-आधारित समाज का विश्लेषण करता है। साथ ही, ए.आई. आधारित अनुवाद और डिजिटल मंचों के माध्यम से हिंदी साहित्य की वैश्विक पहुँच की संभावनाओं पर भी प्रकाश डालता है। शोध-पत्र का निष्कर्ष यह प्रतिपादित करता है कि कृत्रिम मेधा हिंदी साहित्य के लिए प्रतिस्थापन नहीं, बल्कि एक सहायक उपकरण है, जिसका संतुलित और नैतिक उपयोग साहित्य को अधिक समृद्ध, समकालीन और व्यापक बना सकता है।*

**बीज शब्द:** *कृत्रिम मेधा ,हिंदी साहित्य, साहित्य और तकनीक, रचनात्मकता, मानव–मशीन संबंध, डिजिटल साहित्य,भाषा और अनुवाद,साहित्यिक चेतना,नैतिकता,समकालीन विमर्श*

**Received: 11/12/2025**
**Accepted: 24/01/2026**
**Published: 31/01/2026**

***Corresponding Author:**
प्रा. मारोती दत्ता गंगासागरे
**Email:** marotigangasagare2017@gmail.com

## प्रस्तावना

सही और गलत के बीच अंतर करने वाले सिद्धातों ,मूल्यों और मानकों का एक समूह है जो यह निर्धारित करता है कि मनुष्यों को कैसा व्यवहार करना चाहिए , क्या करना अच्छा है और क्या गलत है। इसमें ईमानदारी , करुणा जैसे गुणों का सहयोग होता है जो समाज में सद्भाव बनाए रखने और व्यक्तिगत चरित्र को आकार देने में मदद करते है। यह व्यक्तिगत विश्वासों और सामाजिक मानदंडों से विकसित होती है और इसका उद्देश्य तर्कसंगत और आचरण को बढ़ावा देना है।

साहित्य सृजन से जुड़े नैतिक सिद्धांत और जिम्मेदारियां जो लेखक के पाठ को विषय वस्तु और समाज के प्रति दायित्वों को दर्शाते है जिसमें सच्चाई , प्रतिनिधित्व और रचनात्मक अभिव्यक्ति के बीच संतुलन बनना ही साहित्यिक नैतिकता है। साहित्य कहानी , कविता , उपन्यास , निबंध जैसी अनेक विधाओं से बनता है। इसमें लेखक अपने मन के भावों को तथा अपने विचारों को प्रामाणिकता और सच्चाई के साथ रेखांकित करता है। नैतिकता याने ईमानदारी , सच्चाई या नेक रास्ता जो किसी अनैतिक वर्तन को दूर रखकर जो वास्तव है वही अपने साहित्य में चित्रित करना इसी नेकी या जिम्मेदारी का साहित्य निर्माण में उपयोग उपयोग करना ही साहित्यिक नैतिकता कहलाती है।

किसी शोध या अनुसंधान में भी साहित्यिक नैतिकता का पालन होना आवश्यक है। क्यों कि हम किसी ओर साहित्य का संदर्भ अनुसंधान में लेते है तो उस मूल लेखक का नाम , किताब का प्रकाशन तथा प्रकाशन वर्ष कहा जाए तो अनुसंधान में भी साहित्यिक नैतिकता महत्त्वपूर्ण है। ऐसे साहित्य पर कृत्रिम मेधा का प्रभाव वर्तमान में बहुत गहरा दिख रहा है।" कृत्रिम मेधा एक उभरता हुआ क्षेत्र है जो कंप्यूटर विज्ञान के अंतर्गत आता है और मशीनों को उन कार्यों को करने की क्षमता प्रदान करता है जिन्हें सामान्यतः मानव बुद्धि की आवश्यकता होती है।" [1]

कहां जाए तो जो काम मनुष्य अपने बौद्धिक बल पर करता है वह बौद्धिक कार्य करने की क्षमता अब कंप्यूटर जैसे मशीनों में डाली गई है। मनुष्य ने अपने कार्य जलद गति से पूरे करने के लिए जो मशीन बनाई है उसे ही कृत्रिम मेधा ( A I ) कहा जाता है।

कहां जाए तो , " कृत्रिम बुद्धिमत्ता कंप्यूटर विज्ञान का वह क्षेत्र है जो आमतौर पर मानव बुद्धि से जुड़ी संज्ञानात्मक समस्याओं को हल करने के लिए समर्पित है।"[2] जो कार्य मानव मानव अपने बौद्धिक स्तर पर करने के लिए सक्षम था अब वहीं कार्य मशीनी ढांचे में प्रयोग कर उपयोग में लाया गया है और अब वह प्रत्येक क्षेत्र में मानव से आगे चल रहा है । साथ ही कृत्रिम मेधा (A I ) मानवी जीवन का अविभाज्य पहलू बन गया है। कहा जाए तो मानवी जीवन के प्राथमिक आवश्यकताओं में गिना जाने लगा है। " तकनीकी आविष्कारों ने सामाजिक और आर्थिक प्रगति के विस्तार के लिए प्राथमिक उत्प्रेरक के रूप में कार्य किया है।" [3]

AI यह मानवी जीवन में प्रत्येक पहलू में आवश्यक बन गया है तो फिर सामाजिक, आर्थिक, राजकीय सभी कार्यों में A I की भूमिका महत्वपूर्ण है तो इससे साहित्य कैसे छुट सकता है। साहित्यिक नैतिकता के आधार पर कृत्रिम मेधा का प्रभाव तथा साहित्यिक नैतिकता और कृत्रिम मेधा क्या संबंध है यह निम्न रूप में लेखा जा सकता है । साहित्यिक नैतिकता और कृत्रिम मेधा (Artificial Intelligence) कृत्रिम मेधा (AI) के तीव्र विकास ने साहित्य के सृजन, अध्ययन और आलोचना—तीनों क्षेत्रों में नई संभावनाएँ खोली हैं। साथ ही, इसने साहित्यिक नैतिकता से जुड़े कई महत्वपूर्ण प्रश्न भी खड़े किए हैं। साहित्य जहाँ मानवीय संवेदना, अनुभव भावनाओं का और मूल्य-बोध का प्रतिफल है, वहीं AI डेटा, एल्गोरिद्म और पैटर्न पर आधारित एक तकनीकी व्यवस्था है। जो मानव के इशारे पर चल सकता है इन दोनों के संयोग से उत्पन्न नैतिक प्रश्नों पर विचार किया जाए तो साहित्यिक नैतिकता का पूरी तरह से पालन कृत्रिम मेधा में हो संभव नहीं है क्यों कि पाठक अपने रुचि के नूसार इंटरनेट तथा कंप्यूटर के माध्यम से कोई साहित्य पढ़ना चाहता है तो कृत्रिम मेधा पाठकों के रुचि नुसार पढ़ने के लिए साहित्य उपलब्ध करके देगा मगर वह उसके मूल लेखक कौन है, क्या है यह सही बता पाएगा क्या इसमें प्रश्न चिन्ह है।

**1. रचनात्मकता और लेखकीय अधिकार:**

साहित्यिक नैतिकता का मूल तत्व लेखकत्व है। AI द्वारा रचित कविता, कहानी या लेख में यह प्रश्न उठता है कि लेखक कौन है—AI, उसका प्रोग्रामर, या वाचक वर्ग के इच्छाओं की पूर्णता करता है मगर वह व्यक्ति जिसने निर्देश दिए? यदि AI किसी मौजूदा रचना की शैली की नकल करता है, तो मौलिकता और कॉपीराइट का उल्लंघन हो सकता है। नैतिक दृष्टि से यह आवश्यक है कि AI-निर्मित सामग्री का स्पष्ट घोषणापत्र हो। जो मूल लेखक का नाम बताना या उस रचना का श्रेय जिसे मिलना था उसी को दे ऐसे कही सवाल उठते है

**2. साहित्यिक मूल्यों की रक्षा:**

साहित्य समाज के नैतिक मूल्यों—मानवीय करुणा, न्याय, समानता और सत्य—का संवाहक होता है। AI प्रशिक्षण डेटा में यदि पक्षपात, हिंसा या भ्रामक सामग्री शामिल है, तो वह साहित्यिक नैतिकता को क्षति पहुँचा सकता है। अतः AI के प्रशिक्षण में डेटा की शुद्धता, विविधता और निष्पक्षता अनिवार्य है।

**3. आलोचना, शोध और शिक्षण में नैतिक उपयोग**

AI साहित्यिक शोध, अनुवाद, संदर्भ-संग्रह और विश्लेषण में सहायक हो सकता है। परंतु विद्यार्थियों या शोधार्थियों द्वारा AI-जनित सामग्री को बिना संदर्भ दिए प्रस्तुत करना शैक्षणिक बेईमानी है। नैतिक उपयोग के लिए उद्धरण, संदर्भ और सीमाओं की स्पष्टता आवश्यक है।

**4. मानवीय संवेदना बनाम एल्गोरिद्मिक लेखन**

AI भावनाओं का अनुभव नहीं करता, वह केवल उनका अनुकरण करता है। साहित्य की आत्मा मानवीय संवेदना है; इसलिए नैतिक रूप से AI को सहायक उपकरण के रूप में स्वीकार करना अधिक उपयुक्त है, न कि मानव रचनात्मकता का पूर्ण विकल्प।

**5. भविष्य की दिशा**

साहित्यिक नैतिकता और AI के संतुलन के लिए कुछ सिद्धांत आवश्यक हैं—

AI-निर्मित साहित्य की स्पष्ट पहचान

कॉपीराइट और मौलिकता की रक्षा

पक्षपात-नियंत्रण और जिम्मेदार प्रशिक्षण

मानव रचनात्मकता का केन्द्रीय स्थान

**निष्कर्ष:**

कृत्रिम मेधा साहित्य के लिए एक शक्तिशाली साधन बन सकती है, यदि उसका उपयोग नैतिक मर्यादाओं के भीतर हो। साहित्यिक नैतिकता की रक्षा करते हुए AI का जिम्मेदार उपयोग ही वह मार्ग है, जो तकनीक और मानवीय संवेदना—दोनों को समृद्ध कर सकता है।साहित्य नैतिकता का विचार कृत्रिम मेधा के युग में हम करते है तो हमें यह मानना पड़ेगा कि कृत्रिम मेधा के उपयोग से साहित्य का जो सबसे प्रबल तत्व नैतिकता है यह धोखे में है। मेरे मतानुसार साहित्य लेखक में प्रामाणिकता , ईमानदारी , वैयक्तिक भावों की रक्षा करने के लिए कृत्रिम मेधा सक्षम नहीं

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

है। क्यों कि यहां पाठक वर्ग की इच्छा या जानकारी प्राप्त कर्ता की जरुरते कुछ पलो में पूरी  होती है तो प्राप्त कर्ता भी खुश हो जाता है मगर इस मायावी मेधा में ईमानदारी , प्रामाणिकता जैसे नैतिकता को बढ़ावा देने वाले मूल्य यहां खतरे में है ऐसा दिखाई देता है।

इसी प्रकार साहित्यिक नैतिकता और कृत्रिम मेधा स्पष्ट किया जा सकता है।

**संदर्भ सूची:**


1. साहित्य कलश तथा व्यावहारिक हिंदी - संपादक डॉ प्रो संतोष विजय येरावार पृष्ठ सं 141
2. साहित्य कलश तथा व्यावहारिक हिंदी - संपादक डॉ प्रो संतोष विजय येरावार पृष्ठ सं 141
3. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक अध्याय - डॉ सुनील कुमार शर्मा पृष्ठ सं 16
4. स. भु पत्रिका
5. https// en.wikipedia.otg